ROOTINDEXING
JOURNAL ABSTRACTING AND INDEXING SERVICE
INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
July-December 2023, Submitted in November 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य एवं प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन (कानपुर जनपद के संदर्भ में)

डॉ. दिनेश कुमार मौर्य, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग
विकास कुमार जैसवार, शोधार्थी, एम.एल.के. (पी.जी.) कॉलेज, बलरामपुर

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन में माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। अध्ययन में न्यादर्श के रूप में कानपुर जनपद के 400 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है जिनमें 200 सामान्य व 200 प्रतिभाशाली हैं। प्रमापीकृत समायोजन मापनी के उपयोग से आंकड़ों को एकत्रित किया तथा उनका सांख्यिकीय विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन, व टी–परीक्षण के द्वारा किया गया। निष्कर्ष में पाया गया कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य एवं प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अंतर नहीं है। माध्यमिक स्तर के सामान्य एवं प्रतिभाशाली छात्र एवं छात्राओं के समायोजन में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

मुख्य शब्द :– माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी, समायोजन

प्रस्तावना

शिक्षा मानव के गुणों को विकसित करने की प्रक्रिया है। इसके द्वारा मानव की अन्तर्निहित योग्यताओं को विकसित करके उन्हें समाज सम्मत बनाया जाता हैं। शिक्षा बालक की जन्मजात शक्तियों, विशेषताओं, रूचियों व प्रवृत्तियों में अनुभव तथा कौशल से परिवर्तन करती है तथा प्रकृति, मानसिक स्तर, रूचि, बौद्धिक योग्यता, व्यक्तित्व आदि का विकास करती है।

समायोजन अनुकूलन, सामंजस्य एवं संतुलन इत्यादि के लिए प्रयुक्त एक व्यापक शब्द है। बालक अपने जीवन में जब-जब अच्छा समायोजन करने में सफल होता है, तब-तब वह सभी क्षेत्रों में सफलताएं अर्जित करता जाता है। लेकिन समायोजन के अभाव में बालक के जीवन की सफलताओं पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। अतः बालक के विकास एवं सफलताओं के लिए आवश्यक है कि उसका समायोजन अच्छा हो। समायोजन का सीधा संबंध व्यक्तित्व से है, अतः व्यक्तित्व में जब भी नकारात्मक प्रवृत्तियां विकसित होंगी तब बालक को समायोजित होना प्रारम्भ हो जाएगा। इसके विपरीत जब-जब बालक का समायोजन नकारात्मक दिशा में जाएगा तब-तब बालक के व्यक्तित्व में भी नकारात्मक कारक विकसित कर देगा।

गेट्स व अन्य ''समायोजन निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपने और वातावरण के बीच संतुलित सम्बन्ध रखने के लिये अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है।''

स्मिथ के अनुसार, ''अच्छा समायोजन वह है जो यथार्थ पर आधारित तथा संतोष देने वाला होता है। यह कुण्ठा, तनाव तथा दुश्चिंता को जहां तक सम्भव है कम करता है।''

माध्यमिक स्तर बालकों की वह अवस्था है, जहाँ बाल्यावस्था की समाप्ति व किशोरावस्था का प्रारम्भ होता है। इस समय बालक अपने शारीरिक, मानसिक व संवेगाात्मक परिवर्तनों पर नियंत्रण रखते हुए स्वयं को समायोजित करने का प्रयास करता है। शिक्षा ही है जो बालक को सभ्य बनाती है व समायोजित व्यवहार करना सिखाती है। अच्छे समायोजन वाला बालक भविष्य में सफल होता है। अतः माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन करना आवश्यक है।

संबंधित साहित्य का अध्ययन

- अग्रवाल, प्रियंका (2020) ने ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में विद्यालय वातावरण व उनकी संवेगात्मक अवस्था का उनके समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन (मन्दसौर जिले के सन्दर्भ में) पर शोध कार्य किया। इस शोध का मुख्य उद्धेश्य ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में विद्यालयी वातावरण और संवेगात्मक अस्थिरता का उनके समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना था। यादृच्छिक चयन विधि का उपयोग करते हुए न्यादर्श के रूप में ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के 10 विद्यालयों को लिया गया व प्रत्येक विद्यालय में से 10-10 विद्यार्थियों का चयन किया गया। अतः न्यादर्श के लिए कुल 100 विद्यार्थियों को लिया गया। प्रदत्तों के संकलन हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया गया। शोध परिणाम में यह प्राप्त हुआ कि ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में विद्यालयी वातावरण और संवेगात्मक अस्थिरता का उनके समायोजन पर प्रभाव पडता है।
- सिंह, चन्द्र और शर्मा, हनुमान सहाय (2020) ने शैक्षिक समायोजन पर निर्देशन एवं परामर्श के प्रभाव का अध्ययन पर शो ध कार्य किया। इस शोध का उद्धेश्य माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन के पूर्व -पश्च परीक्षण पर निर्देशन एवं परामर्श का अध्ययन करना। इस शोध कार्य में प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग किया गया। न्यादर्श के लिए अजमेर जिले के केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 1 के माध्यमिक कक्षा स्तर के 40 विद्यार्थियों का चयन सोउद्देश्य विधि से किया किया गया। शोध परिणाम में यह प्राप्त हुआ कि निर्देशन एवं परामर्श का शैक्षिक समायोजन पर सार्थक प्रभाव पडता है।
- जयसवाल, अनुपम (2019) ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन आयामों एवं उनके माता-पिता की सहभागिता आयामों के मध्य सम्बन्धों का अध्ययन पर शोध किया। इस अध्ययन का उद्येश्य माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन एवं उनके माता-पिता की विद्यालयी सहभागिता के मध्य सम्बन्ध ज्ञात करना था। इस शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। न्यादर्श के लिए लखनऊ नगर के माध्यमिक शिक्षा परिषद् प्रयागराज, उत्तर प्रदेश से मान्यता प्राप्त समस्त माध्यमिक विद्यालयों में से 10 बालक विद्यालय, एवं 10 बालिका विद्यालयों का चयन या–च्छिक रूप से किया गया। रीता चोपड़ा एवं सुराबाला साहू द्वारा विकसित माता-पिता सहभागिता मापनी तथा ड,. ए.के.पी. सिन्हा तथा ड,. आर. पी. सिंह द्वारा विद्यालयी विद्यार्थियों के लिए विकसित समायोजन मापनी का प्रयोग आंकडों का संकलन करने के लिए किया गया। प्राप्त आंकड़ों का सांख्यकीय विश्लेषण मध्यमान, माध्य से विचलन, सहसम्बन्ध गुणांक विधि द्वारा किया गया। निष्कर्ष में यह पाया कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन एवं उनके माता-पिता की विद्यालयी सहभागिता में धनात्मक

सार्थक सम्बन्ध है अर्थात् माता-पिता की विद्यालयी गतिविधियों में सक्रिय सहभागिता विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन को सु—ढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

- कुमार, कुलदीप (2019) ने माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं की अध्ययन आदतों का समायोजन स्तर के सन्दर्भ में अध्ययन किया। इस शोध का उद्धेश्य माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं की अध्ययन आदतों का समायोजन स्तर का अध्ययन करना था। इस शोध-कार्य को राजकीय आश्रम पद्धति के सहारनपुर, मेरठ व बिजनौर जनपदों के विद्यालयों के कक्षा -11 के 140 विद्यार्थीयों (80छात्र+60छात्राऐं) पर सम्पन्न किया गया है। इस शोध अध्ययन में आदर्श मूलक सर्वेक्षण विधि का अनुगमन किया गया। निष्कर्ष में पाया गया कि छात्रों की अपेक्षा छात्राओं की अध्ययन आदतें अच्छी होती है। छात्र एवं छात्राओं के उच्च एवं निम्न समायोजन स्तर का अध्ययन आदतों पर सामान्य प्रभाव पड़ता है।
- कुमार, मनोज (2019) ने अनुसूचित जाति तथा सवर्ण विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन पर शोध कार्य किया। इस शोध का मुख्य उद्धेश्य अनुसूचित जाति तथा सवर्ण विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना था। इस शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। न्यादर्श के लिए 200 विद्यार्थियों का चयन किया गया। शोध परिणाम में यह प्राप्त हुआ कि अनुसूचित जाति तथा सवर्ण विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अंतर पाया जाता है।

अध्ययन का औचित्य

आज की शताब्दी मानव के विकास में अपना अनुठा स्थान रखती है। ज्ञान के विस्फोट के साथ आज मानव व्यवहार की प्रक्रिया, उसकी रूचि, कार्य कुशलता, उपलब्धि स्तर,एवं समायोजन क्षमता आदि के साथ आबद्ध कर विद्यार्थियों का वैज्ञानिक रूप से अध्ययन किया जाने लगा है। आज बालकों की उपलब्धि अर्जन क्षमता, सकारात्मक वातावरण तथा समायोजन स्थापित करने की प्रवृति का प्रश्न सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास तभी हो सकता है, जब वह उच्च शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करें और जिससे विद्यार्थी सही दिशा में समायोजित हो सके और जीवन को सही दिशा प्रदान कर सके। ज्ञान के विस्फोट के साथ आज मानव व्यवहार की प्रक्रिया, उसकी रूचि, कार्य कुशलता, उपलब्धि स्तर, व्यक्तित्व विकास एवं समायोजन क्षमता आदि के साथ आबद्ध कर विद्यार्थियों का वैज्ञानिक रूप से अध्ययन किया जाने लगा है। आज बालकों की उपलब्धि अर्जन क्षमता, सकारात्मक वातावरण तथा समायोजन स्थापित करने की प्रवृति का प्रश्न सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास तभी हो सकता है, जब वह उच्च शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करें और जिससे विद्यार्थी सही दिशा में समायोजित हो सके और जीवन को सही दिशा प्रदान कर सके। प्रस्तुत अध्ययन के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया है कि क्या सामान्य एवं प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के समायोजन में भी भिन्नता होती है?

समस्या कथन

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य एवं प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन (कानपुर जनपद के संदर्भ में)

शोध के उद्देश्य

1 माध्यमिक स्तर के सामान्य एवं प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन करना।
2 माध्यमिक स्तर के सामान्य छात्र एवं छात्राओं के समायोजन का अध्ययन करना।
3 माध्यमिक स्तर के प्रतिभाशाली छात्र एवं छात्राओं के समायोजन का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पना

1 माध्यमिक स्तर के सामान्य एवं प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।
2 माध्यमिक स्तर के सामान्य छात्र एवं छात्राओं के समायोजन में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।
3 माध्यमिक स्तर के प्रतिभाशाली छात्र एवं छात्राओं के समायोजन में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

शोध प्रविधि – वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग प्रयुक्त अनुसंधान में किया गया है।

जनसंख्या – प्रस्तुत शोध अध्ययन में कानपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के समस्त विद्यार्थियों को जनसंख्या में रखा गया है।

न्यादर्श – प्रस्तुत शोध अध्ययन में कानपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के 400 विद्यार्थियों को साधारण यादृच्छिक विधि द्वारा चुना गया है। जिनमें से 200 सामान्य एवं 200 प्रतिभाशाली विद्यार्थी हैं।

उपकरण – प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययन करने के लिये डॉ. ए.के.पी. सिन्हा एवं डॉ. आर.पी. सिंह द्वारा निर्मित समायोजन मापनी का प्रयोग किया गया है।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी – प्रस्तुत अनुसंधान कार्य में निम्नलिखित सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है-

- मध्यमान
- मानक विचलन
- टी परीक्षण

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

परिकल्पना – 1 माध्यमिक स्तर के सामान्य एवं प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

तालिका संख्या – 1

माध्यमिक स्तर के सामान्य एवं प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के समायोजन में अंतर

समूह	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी-मूल्य	परिणाम
सामान्य विद्यार्थी	200	76.29	15.06	0.61	स्वीकृत
प्रतिभाशाली विद्यार्थी	200	75.39	14.24		

व्याख्या-

उपरोक्त तालिका के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है, कि माध्यमिक स्तर के सामान्य विद्यार्थियों के समायोजन का मध्यमान 76.29, मानक विचलन 15.06 पाया गया तथा प्रतिभाशाली विद्यार्थियों का मध्यमान 75.39, मानक विचलन 14.24 पाया गया है। इन प्राप्तांकों से टी परीक्षण का मान 0.61 प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता के अंश 398 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर टी का मूल्य 1.96 है। अर्थात् टी का गणना किया गया मूल्य, तालिका मूल्य से कम है इस आधार पर शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। अतः कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के सामान्य एवं प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

परिकल्पना - 2 माध्यमिक स्तर के सामान्य छात्र एवं छात्राओं के समायोजन में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

तालिका संख्या - 2

माध्यमिक स्तर के सामान्य छात्र एवं छात्राओं के समायोजन में अंतर

समूह	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी-मूल्य	परिणाम
सामान्य छात्र	100	75.95	14.38	0.89	स्वीकृत
सामान्य छात्राएँ	100	77.76	14.44		

व्याख्या-

उपरोक्त तालिका के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है, कि माध्यमिक स्तर के सामान्य छात्रों के समायोजन का मध्यमान 75.95, मानक विचलन 14.38 पाया गया तथा सामान्य छात्राओं का मध्यमान 77.76, मानक विचलन 14.44 पाया गया है। इन प्राप्तांकों से टी परीक्षण का मान 0.89 प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता के अंश 198 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर टी का मूल्य 1.97 है। अर्थात् टी का गणना किया गया मूल्य, तालिका मूल्य से कम है इस आधार पर शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। अतः कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के सामान्य छात्र एवं छात्राओं के समायोजन में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

परिकल्पना - 3 माध्यमिक स्तर के प्रतिभाशाली छात्र एवं छात्राओं के समायोजन में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।तालिका संख्या - 3

माध्यमिक स्तर के प्रतिभाशाली छात्र एवं छात्राओं के समायोजन में अंतर

समूह	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी-मूल्य	परिणाम
प्रतिभाशाली छात्र	100	77.62	14.65	1.37	स्वीकृत
प्रतिभाशाली छात्राएँ	100	74.76	14.89		

व्याख्या-

उपरोक्त तालिका के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है, कि माध्यमिक स्तर के प्रतिभाशाली छात्रों के समायोजन का मध्यमान 77.62, मानक विचलन 14.65 पाया गया तथा प्रतिभाशाली छात्राओं का मध्यमान 74.76, मानक विचलन 14.89 पाया गया है। इन प्राप्तांकों से टी परीक्षण का मान 1.37 प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता के अंश 198 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर टी का मूल्य 1.97 है। अर्थात् टी का गणना किया गया मूल्य, तालिका मूल्य से कम है इस आधार पर शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। अतः कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के प्रतिभाशाली छात्र एवं छात्राओं के समायोजन में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

सुझाव

शिक्षा का दायित्व विद्यार्थियों का सम्पूर्ण विकास करना होता है। यह सम्पूर्ण विकास विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता पर निर्भर करता है। अतः शिक्षा का स्वरूप ऐसा होना चाहिए कि उसके माध्यम से विद्यार्थियों में समायोजन की क्षमता का विकास किया जा सके। शिक्षकों को विद्यालय में स्वस्थ एवं उचित वातावरण निर्मित करना चाहिये। निर्देशन एवं परामर्श की उचित व्यवस्था की जानी चाहिये।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- भारद्वाज, जे.एल. (2002) : सांख्यिकीय तकनीक, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
- रायजादा, बी.एस. (1997) : शिक्षा में अनुसंधान के आवश्यक तत्व, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
- वर्मा, प्रीति एवं श्रीवास्तव, डी.एन. (2001) : मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
- शेखर, वी. शर्मा, व्यास एवं पालीवाल. (1987) : राजस्थान में शिक्षानुसंधान सम्प्राप्तियों एवं सम्भावनाएं, शिक्षा विभाग, बीकानेर।
- सुखिया, एस.पी., मेहरोत्रा, पी.बी. एवं मेहरोत्रा, आर.एन. (1970): शैक्षिक अनुसंधान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

WIKIPEDIA
The Free Encyclopedia
9828015814 SFA 9309415814
SHRADHA EDUCATIONAL ACADEMY
ADVANCED SCIENCE INDEX